नेक सुलूक

इमादुल उलमा अल्लामा सैय्यद मुहम्मद रज़ी मुजतहिद

हुस्ने सुलूक और नेक बर्ताव की इस्लाम ने तरह–तरह से तालीम दी है। सूर–ए–निसा में अल्लाह ने फ़रमाया है जिसका तर्जुमा यह है :–

अल्लाह की इबादत करो और उसके साथ किसी को शरीक न बनाओं। माँ–बाप के साथ अच्छा बर्ताव करो और रिश्तेदारों और यतीमों से, मोहताजों से और क़राबतदार पड़ोसी से, पड़ोसी से, अजनबी पड़ोसी से, पास रहने वाले से, मुसाफ़िरों से और जो कोई तुम्हारे क़ब्ज़े में हो और तुम उसके मालिक हो उससे भी ग़र्ज़ इन सबसे नेक बर्ताव और अच्छा सुलूक करो। बेशक अल्लाह किसी गुरूर और फ़ख्र करने वाले को पसन्द नहीं करता। (सूर–ए–निसा आयत–36)

यहाँ अल्लाह ने अपनी इबादत का हुक्म देने के बाद सबसे पहले वालदैन से अच्छा बर्ताव करने का हुक्म दिया है। इससे माँ–बाप के मर्तबे की अहम्मियत ज़ाहिर होती है और ज़ाहिर है कि हम उन ही की वजह से पैदा हुए, उन ही ने दुख झेलकर हमारी परवरिश की और हमारी वजह से कितनी रातें जाग कर और कितने दिन मुसीबत झेलकर गुज़ार दिये फिर हम पर उन का हक़ अल्लाह की इबादत के बाद सबसे ज़ियादा क्यों न हो। इसीलिये अल्लाह ने इसको इस क़दर अहम्मियत देकर बयान फ़रमाया है।

एक बार का ज़िक्र है हुजूरे अनवर (स0) ने फ़रमाया :

बड़ा बदनसीब है! बड़ा बदनसीब है! सहाबा किराम (रजि0) ने अर्ज़ की : हुज़ूर! कौन बड़ा बदनसीब है? फ़रमायाः

''वह आदमी जिसके माँ–बाप मौजूद हो और फिर भी वह उनकी ख़िदमत करके जन्नत हासिल न करे।''

अल्लाह की इबादत और माँ–बाप की इताअत के हुक्म के बाद इस आयत में जिसका तर्जुमा अभी मैंने बयान किया रिश्तेदारों की साथ हुस्ने सुलूक का हुक्म है फिर यतीमों और हाजतमन्दों की मदद करने और उनके साथ नेकी का बर्ताव करने का फ़रमान है।

हुज़ूर (स0) ने एक हदीस में फ़रमाया है कि : ''जो शख़्स यतीमों और बेवाओं और मोहताजों की ख़िदमत में लगा रहता है उसको वही दर्जा मिलेगा, जो ख़ुदा की राह में जिहाद करने वालों का होता है।''

आयत में इसके बाद इसका हुक्म है कि अपने पड़ोसी जो रिश्तेदार न हों या रिश्तेदार पड़ोसी सब पर एहसान किया करो और उसके साथ भी अच्छा सुलूक किया करो।

हुज़ूर (स0) ने फ़रमाया है कि :

''अल्लाह की क़सम वह आदमी मोमिन नहीं है जिसका पड़ोसी उसकी शरारतों से महफ़ूज़ न हो।'' फिर वह पड़ोसी चाहे हमारा रिश्तेदार न हो बल्कि हम मज़हब यानी मुसलमान भी न हो

.......................(बक़िया पेज–14 पर)

था। अपने शीओं को मुतनब्बे फ़रमाया करते थे कि तमाम आमाल हर शाम, वक़्त के इमाम के सामने पेश किये जाते हैं और वह तुम्हारे हक़ में इस्तेग़फ़ार करते हैं लिहाज़ा तुम अपने गुनाहों से उनका दिल मत दुखाओ और ऐसे बन जाओ जैसे शीओं को होना चाहिए।

सख़ावत की सूरते हाल यह है कि आप ख़ुरासान में थे अरफा के दिन अपना तमाम माल राहे ख़ुदा में दे दिया।

बेमिस्ल व नज़ीर फ़ज़ाएल व कमालात के हामिल इमामे मुबीन (अ0) को लोगों ने मर्ज़े हसद व बुग़्ज़ की बिना पर दुनिया में रखना मुनासिब न समझा और शैतानी हरबों से हमेशा यही कोशिश रही कि अहलेबैत (अ0) का नाम व निशान मिटा दिया जाये, लेकिन ख़ुदा अपनी हुज्जत को बाक़ी रखने वाला है।

इमामे रिज़ा (अ0) ने फ़रमाया : ''ख़ुदा की क़सम हम अहलेबैत वह हैं जो दुनिया से नहीं जाएँगे मगर यह कि क़त्ल किये जाएँ या शहीद होंगे।'' साएल ने पूछा : ''ऐ इब्ने रसूलुल्लाह! आपको शहीद कौन करेगा?''

फ़रमाया : ''ज़मीन पर रहने वाला बदतरीन शख़्स और हमें अइज़्ज़ा व अक़ारिब से दूर ग़रीबुल वतनी में दफ़न करेगा जो शख़्स ग़ुरबत के आलम में हमारी ज़ियारत करेगा उसका सवाब अल्लाह की बारगाह में सौ हज़ार शोहदा, सिद्दीक़ीन और हज व अमरा नीज़ जिहाद का होगा। रोज़े क़यामत वह हमारे साथ महशूर होगा और हमारे साथ बेहश्त में आला दरजात पर होगा।''

इमामे सादिक़ (अ0) ने फ़रमाया कि हज़रत रसूले ख़ुदा (स0) फ़रमाते हैं : ''हमारा एक पार–ए–तन ख़ुरासान की सरज़मीन में दफ़न होगा जिस मोमिन ने उनकी ज़ियारत की उस पर बेहश्त वाजिब होगी और आतिशे जहन्नम उस पर हराम होगी।''



(बक़िया................नेक सुलूक)

और काफ़िर व मुशरिक ही क्यों न हो जबकि हमारे अल्लाह और रसूल (स0) का हुक्म है कि हम उसके साथ अच्छा बर्ताव करें और उसके लिये तकलीफ़ का बाअिस न बनें।

फिर साथियों के साथ भी नेक सुलूक करने का हुक्म है चाहे वह साथी स्कूल और कालेज के हो, चाहे दफ्तर के हों, चाहे सफर के हों। मुख़्तसर यह कि हर मुसलमान को हुक्म दिया गया है कि वह अपने साथियों की इज़्ज़त व एहतेराम करे और उनके साथ अच्छा सुलूक किया करे।

''मा मलकत अइमानुकुम'' यानी जो तुम्हारे क़ब्ज़े में हों। इस जुमले के अन्दर वह तमाम लोग आ गये जो किसी तरह से भी हमारे ज़ेरे इक़्तेदार हों। जैसे कनीज़, ग़ुलाम, नौकर–चाकर, क़ैदी, रिआया यहाँ तक कि वह जानवर भी जो हमारी क़ैद में हों। इन सब से भी अच्छा बर्ताव करना इस्लाम के नज़दीक ज़रूरी है। फिर आख़िर में फ़रमाया गया है कि अल्लाह उस आदमी को दोस्त रखता है जो दूसरों से झुक कर मिले, अल्लाह की इबादत करे और तमाम लोगों से नेक बर्ताव करे। अगर आज इस्लाम के इस हुक्म पर पूरी शिद्दत और पूरे ख़ुलूस के साथ अमल किया जाये तो हमारी यह दुनिया और हमारा यह समाज ख़ुशहाली और आराम व अमन व सुकून की जन्नत बन जाए। □□□